इक सपना

बगदाद में एक आदमी रहता था। वह कभी बहुत अमीर हुआ करता था। पर, एक समय ऐसा आया कि वह कंगाल हो गया। वह जी-तोड़ मेहनत करता। पर उसे पेट भर खाने लायक कमाई नहीं मिल पाती थी। वह तंगहाली और उदासी से भर गया।

एक रात उसे एक सपना आया। सपने में एक आदमी दिखा। उस आदमी ने उससे कहा, "तुम्हारी किस्मत काइरो (मिस्र की राजधानी) में खुलेगी। वहाँ जाओ!"

वह सुबह उठा और सीधे काइरो की तरफ निकल पड़ा। जब वह काइरो पहुँचा तब तक शाम हो चुकी थी। वह वहीं एक मस्ज़िद में सो गया। उसी मस्ज़िद से लगा हुआ एक घर था। उस रात चोरों की एक मण्डली मस्ज़िद के सहारे उस घर में उतर गई। घर के लोग चोरों की आहट से जाग गए। चीख-पुकार मच गई। शोरगुल सुनकर वली अपने पँथियों की मदद करने आ पहुँचे। पर, वली के पहुँचने से पहले ही चोर घर से भाग चुके थे। वली ने देखा मस्ज़िद में एक आदमी सोया पड़ा है। उन्होंने उसे पकड़ लिया और इतना पीटा कि वह अधमरा हो गया। इसके बाद उस आदमी को जेल में डाल दिया गया।

तीन दिन बाद इस आदमी को वली के सामने पेश किया गया। वली ने उससे पूछा, "तुम यहाँ किस काम से और कहाँ से आए हो?" आदमी ने वली को अपनी कहानी सुना दी, "जनाब, एक रात एक अजनबी ने सपने में आकर मुझसे कहा कि तुम काइरो जाओ। तुम्हारी किस्मत चमक उठेगी। और जनाब, यहाँ आकर मेरी किस्मत तो न चमकी हाँ, मेरी अच्छी-खासी मरम्मत ज़रूर हो गई।" उसकी बात सुनकर वली हँस-हँस कर लोटपोट हो गया। वली बोला, "तुम सचमुच बहुत बड़े बेवकूफ हो! मुझे तीन बार एक आदमी ने सपने में इसी तरह के झाँसे दिए थे। कहता था कि बगदाद में फलाँ ज़िले में फलाँ जगह पर फलाँ किस्म का एक घर है। उस घर के अहाते में एक बगीचा है। उस बगीचे में फव्वारा है। बस, इसी फव्वारे के नीचे खज़ाना गड़ा है। इतना कहकर वह मुझसे कहता था कि जाओ बगदाद और खज़ाना ले आओ। मैं अगर उसकी बात मान लेता तो अभी बगदाद की खाक छानता फिर रहा होता। तुम्हारी तरह।" यह सब सुन उस आदमी की आँखें चमक उठीं। वली ने अभी-अभी जिस घर का ज़िक्र किया था वह तो उसका अपना घर था। वह सीधे अपने घर की ओर चल पड़ा। घर पहुँचते ही उसने फव्वारे के नीचे खुदाई शुरू कर दी। थोड़ी ही देर में उसे वहाँ अपार खज़ाना मिला। वह आदमी बड़ी देर तक इस आश्चर्यजनक संयोग के बारे में सोचता रहा।

चित्रः अतनु राय

– *द अरेबियन नाइट्स एंटरटेनमेंट्स* से साभार